जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड,
सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१
संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५७ वे ❖ अंक २-३ ❖ ऑक्टोबर-नोव्हेंबर २०२५ ❖ वीर संवत २५५२ ❖ विक्रम संवत २०८२

या अंकात	पान नं.
• दीपावली पूजनाची जैन विधी	२३
• दीपावली पूजनाचे मुहुर्त	२७
• दीपावली – एक विशेष चिन्तन	२९
• गौतम प्रतिपदा : नव वर्ष	३३
• दीपावली	३४
• ''मेरा भाई'' (लघु उपन्यास)	४३-६९
• वित्त नहीं, वीतराग वाणी ही भव रोग की औषधी	७१
• तीन सवाल	७३
• आओ ! दुर्ध्यान छोडे १२. मिथ्यात्व ध्यान	७५
१३. मूर्च्छा ध्यान, १४. शंका ध्यान	७८-८०
• गुलामी से आत्म गौरव की ओर	८१
• क्या पटाखे आनंद देते है ?	८२
• संप्रदायों ने महावीर को अनुयायी बनाया है	९१
• बिने जाने कित जाऊँ – प्रश्नोत्तरी प्रवचन	९५
• बडा कौन	९५
• दानवीर जगडूशा	१०१
• हास्य जागृती	१०६
• बारा भावना	११५
• जीवन की पावर फुल बातें	११९
• जीवन में ईमानदारी का प्रभाव	१२०
• पुरुषार्थ ही फलदायी है : श्रावक शकडाल पुत्र	१२३
• धर्म बिन्दु ग्रंथ में वर्णित भाषा के गुण	१२९
• मंत्राधिराज प्रवचन सार	१३९
• ताजा भोजन	१४२
• नफरत V/s प्यार	१४३
• बलाढ्य पोर्तुगीज आरमारला धडा शिकवणारी – अब्बक्का राणी	१४४
• शुभ मंगल हवे ? रहा सावधान – टाळा व्यवधान	१४७
• वेळ नाही	१५०
• पापात कोणी भागीदार होणार नाही	१५१
• वैराग्य वाणी	१५२
• समग्र जैन चातुर्मास सूची २०२५	१६३

- श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ तीर्थ १६८
- विश्व अहिंसा दिन १७१
- बिखरे मोती १७२
- परिवार की समरसता एवं सुसंस्कार १७५
- जीने की कला – माइंड मैनेजमेंट १७६
- परिस्थिती १७९
- मन की पकड १८३
- चूके सो गोता खाए १८४
- धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा १८५
- आगम वाणी १८७
- जागृत विचार १८८
- पासवर्ड – Passward १८९
- बच्चों की परवरिश कैसे की जाए १९१
- सत्य का ज्ञान बुद्धि के द्वारा नहीं भावना द्वारा होता है। १९३
- जैन कॉन्फरन्स – चिचंवड शाखा १९५
- नाहर बंधू संमेलन, पुणे १९६
- दि पूना मर्चन्टस् चेंबर १९७
- एकता भनसाली – अध्यक्षपदी १९९
- डायग्नोपीन, नाशिक – उद्घाटन १९९
- राजस्थान सरकार की अभिनव पहल २००
- एच.एन.डी. जैन बोर्डिंग, पुणे २०१
- श्री महाराष्ट्रीय जैन विद्याभवन, जुन्नर २०४
- आनंदऋषिजी नेत्रालय – उद्घाटन २०५
- नवरत्न चिक्की, लोणावळा – पुरस्कार २०५
- श्री. प्रवीण चोरबेले – निवड २०७
- श्री. मुकेशजी छाजेड – निवड २०७
- सुरक्षा २१०
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति – ''मॅगझिन पोस्ट'' सुविधेसह वर्गणीचे दर (महाराष्ट्र साठी)

❊ वार्षिक वर्गणी – रु. ८०० ❊ त्रिवार्षिक वर्गणी – रु. २३००

जैन जागृति – ''मॅगझिन पोस्ट'' सुविधेसह वर्गणीचे दर (महाराष्ट्र बाहेर)

❊ वार्षिक वर्गणी – रु. ९०० ❊ त्रिवार्षिक वर्गणी – रु. २६००

मॅगझिन पोस्ट या सुविधेमुळे प्रत्येक ग्राहकांना १००% अंक ४ ते ५ दिवसात मिळणार.

या अंकाची किंमत १०० रु. ● Google Pay - M. 9822086997

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे - ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे - ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक - एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

दीपावली पूजन विधी

मनुष्य के जीवन में उत्सवों का बड़ा महत्त्व है । उन पर्वों में दीपावली पर्व भारत वर्ष का एक श्रेष्ठतम पर्व है । दीपावली दीपोत्सव का, प्रकाशोत्सव का पर्व है । शक्ति, भक्ति और श्रध्दा का पर्व है । दीपक की शुभ ज्योति हमें ऊर्ध्वगमन का शुभ संदेश देती है, साथ ही अपने सान्निध्य में आनेवाले हर दीप को ही नहीं हर बुझे दीप को भी प्रकाशित करने का संदेश देती है । दीप से दीप जलते जाते हैं और दीपमाला बनकर दीपावली बन जाती है ।

यह पर्व मानव जीवन की पूर्णता और उसकी सार्थकता को जानने-समझने का पर्व है । हमारे भीतर अज्ञान का तमस छाया हुआ है, जो ज्ञान के प्रकाश से ही मिट सकता है । ज्ञान ही संसार में सबसे बड़ा एवं सर्वश्रेष्ठ प्रकाश है । जब ज्ञान का दीप जलता है, तब भीतर और बाहर दोनों ओर आलोक जगमगाता है ।

प्रभु महावीर के इस निर्वाण पर्व दीपावली के उपलक्ष में हम अहिंसा के दीप जलाये, मैत्री का प्रकाश फैलाये और आपस में प्रेमभाव बढ़ाने का प्रयास करें ।

जैन समाज में इस त्योहार का विशेष महत्त्व इसलिए है कि इसी दिन अमावस्या को भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण हुआ था । वे जन्म-मृत्यु के दुखों से मुक्त होकर मोक्ष गामी हुए । चतुर्दशी और अमावस्या ये दो दिन लगातार भ. महावीर स्वामी जनसमुदायों को अंतिमदेशना (उपदेश) देते रहे । वह उपदेश ही उत्तराध्ययन सूत्र है । जिसका पठन-पाठन श्रवण इन दिनों में किया जाता है । कई महानुभाव बडी श्रध्दा के साथ उपवास करते है । भ. महावीर का जाप करते हैं । पौषध के साथ उपवास करते हैं ।

कार्तिक सूद प्रतिपदा के दिन प्रथम गणधर गौतमस्वामीजी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ । नए वर्ष के प्रात:काल में गौतमस्वामीजी का जाप किया जाता है । सभी भक्त जन सुबह गुरु भगवंतों के मुखारविंद से शुभ मांगलिक श्रवण करते है । मंत्र गर्भित स्तोत्र का श्रवण करते हैं। इसके बाद ही अपने कार्य का प्रारंभ करते हैं ।

दीपावली त्योहार हमारे लिए एक महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक त्योहार है । - संपादक

दीपावली पूजन विधी

सर्व प्रथम घर के सभी सदस्य मंगलभावना के साथ तीन बार नवकार महामंत्र का भक्तिसे भर कर उच्चारण करे ।

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिध्दाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं,
एसो पंच णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

तीर्थंकरों को वंदन

समवशरण का स्मरण कर पूर्व और उत्तर दिशा के बीच ईशान्य दिशा में महाविदेह क्षेत्र है वहाँ बीस विहरमान तीर्थंकर वर्तमान में विराजमान है अत: अत्यंत भावपूर्ण हृदय से उन्हें तीन बार वंदन नमन करें ।

गुरु भगवंत को वंदन

जो गुरु आपने माने हैं उन्हें श्रध्दापूर्वक वंदना करना ।

- शुभ मुहूर्त पर गद्दी या गालीचा बिछाकर भ. महावीर स्वामीजी, श्री गौतम स्वामीजी, श्री लक्ष्मी देवी, श्री सरस्वती देवी के फोटो पूर्व या उत्तर दिशा में रखें।
- गद्दीपर नई बहियाँ (नोट बुक), बिल बुक, चेक बुक, सुवर्ण-चांदी या धातु के देवी देवताओं के सिक्के, नया पेन पूजा की सामग्री रखें ।
- पूजा के लिए साहित्य - खाने के पान डंढल सहित,

॥ ॐ अर्हम् नमः ॥

श्री

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री शुभ 卐 श्री लाभ

श्री आदिनाथाय नमः **श्री शांतिनाथाय नमः**

श्री पार्श्वनाथाय नमः **श्री महावीराय नमः**

श्री सद्गुरूभ्यो नमः

श्री गौतमस्वामी की लब्धि, श्री भरतजी की ऋध्दि,
श्री अभयकुमारकी बुध्दि, श्री कयवन्नाजी का सौभाग्य,
श्री धन्ना शालिभद्रजीकी संपत्ति, श्री बाहुबलीजीका बल,
तथा श्री श्रेयांसकुमार की दानवृत्ती प्राप्त होवे !
श्री जिनशासन की प्रभावना होवे !

॥ श्री सरस्वती देवी नमः ॥ श्री महालक्ष्मी देवी नमः ॥

नूतन वर्ष

वीर संवत २५५२, विक्रम संवत २०८२

कार्तिक सुद १ बुधवार दि. २२/१०/२०२५

पूजन दिन * सोमवार दि. २०/१०/२०२५

*** मंगळवार दि. २१/१०/२०२५**

卐

सुपारी, लौंग, इलायची, कुंकुम, वासक्षेप, अक्षदा (चावल), श्रीफल (नारियल), फूल, घी का दीया, धूप, अगरबत्ती, जल, फल (Fruit), ईख (Sugar cane), नैवद्य (मिठाई), लक्ष्मी (झाडु), लाभ (लाह्या) बत्तासा, मोली, आरती के लिए कपूर।

- पूजा करनेवाला घर का मुखिया तीन नवकार मंत्र का जाप करके हाथ में मोली बाँधे । फोटो, सिक्के इनको तिलक लगाएँ अक्षदा चढावे ।
- गद्दी की दाहिनी तरफ घी का दीया और बायीं तरफ धूप अगरबत्ती लगाएँ । और साईड में ईख (Sugar cane) खडा रखें ।
- नवकार मंत्र बोलते-बोलते पेन, दीया, कलश, लक्ष्मी, ईख (Sugar cane) इ. को मोली बांधे । कुंकुम से तिलक करें ।
- नई बही के पहले पन्नेपर बाजु की चौकट का मायना लिखें ।

लिखने के बाद कुंकुम से स्वस्तिक निकालें । नई बहियाँ पिछले वर्ष की अकाऊंट की एक बही, बिल बुक, चेक पुस्तक, लक्ष्मी इ. सभीपर डंढल सहित एक पर एक दो पान रखें । उसपर एक रुपया और उसपर सुपारी, लौंग, इलायची रखें । हाथ में पानी लेकर बही के चारों ओर घुमावे । वासक्षेप, कुंकुम मिश्रित चावल के दाने हाथ में लेकर निम्न श्लोक और मंत्र बोलें ।

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः ।
मंगलं स्थूलीभद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ।
मंत्र – ॐ आर्यावर्ते, आस्मिन् जंबूद्वीपे
दक्षिणार्धभरते भरतक्षेत्रे-भारतदेशे (पूना) नगरे
ममगृहे श्री शारदा देवी, श्री लक्ष्मीदेवी
आगच्छ आगच्छ, तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।

अक्षदा बहीपर अर्पण करें । बाद में निम्नलिखित स्तुति का पठन करें ।

॥ स्तुती ॥

स्वश्रीयं श्रीमद् अरिहंता, सिद्धः पुरीपदम्,
आचार्यः पंचधाचारं, वाचकां वाचनांवराम्।
साधवः सिद्धी साहाय्यं वितन्वन्तु विवेकिनाम्,

मंगलानां च सर्वेषां, आद्यं भवति मंगलम् ।
अर्हमित्यक्षरं माया, बीजं च प्रणवाक्षरम्,
एवं नाना स्वरूपं च, ध्येयं ध्यायन्ति योगिन:।
हृत्पदं षोडशदलं, स्थापितं षोडशाक्षरम्
परमेष्ठिस्तुते बीजं, ध्यायेक्षरदूरदं मुदा ।
मंत्रणामादिमं मंत्रं, तंत्र विघ्नौघ निग्रहे,
ये स्मरन्ति सदैवेनं, ते भवन्ति जिन प्रभा ।।

तत्पश्चात् निम्नलिखित मंत्र जप करते-करते **जल, चंदन, पुष्प (फूल), धूप, दीप, अक्षदा (चावल), फल, नैवेद्य** इन आठ वस्तुओं से वही पूजन करें ।

ॐ ह्रीं श्री भगवत्यै, केवलज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशिकायै, सरस्वत्यै, लक्ष्मयै (जलं) समर्पयामि स्वाहा ।

दूसरी बार यही श्लोक बोलते हुए जल की जगह चंदन बोले इस प्रकार आठों ही वस्तुओं के नाम लेकर आठ बार यह श्लोक बोलें ।

पूजा में सभी सदस्य खडे होकर निम्नलिखित प्रार्थना बोलें ।

।। श्री सरस्वती स्तोत्र ।।

सकल लोक सुसेवित पंकजा
वर यशोर्जित शारद कौमुदी,
निखिल कल्मष नाशन तत्परा
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
कमल गर्भ विराजित भूधना,
मणि किरीट सुशोभित मस्तका,
कनक कुंडल भूषित कर्णिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
वसुहरिद् गज संस्नपितेश्वरी
विधृत सोमकला जगदीश्वरी,
जलज पत्र समान विलोचना
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
निज सुधैर्य जितामर भूधरा,
निहित पुष्कर वृंदल सत्कारा
समुदितार्क सदृतनु बल्लिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
विविध वांछित कामदुधाद्भूता,
विशद पद्म हृदान्तर वासिनी
सुमति सागर वर्धन चंद्रिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।

।। श्री लक्ष्मी स्तोत्र ।।

नमोस्तुते महालक्ष्मी महासौख्य प्रदायिनी
सर्वदा देही मे द्रव्यं, दानाय मुक्ती हेतवे ।। १ ।।
धनं धान्य धरां हर्ष, कीर्तिम्, आयु: यश: श्रियम्
वाहनाम् दन्तिन् पुत्रान, महालक्ष्मी प्रयच्छ मे ।।२ ।।
यन्मया वांछितं देवी, तत्सर्वं सफलं कुरू
न बान्ध्यन्ता कुकर्माणि, संकटान्मे निवारय ।।३ ।।

।। प्रार्थना ।।

सुंदर आरोग्य निवास करे दृढ तन में ।
आशा, उत्साह, उमंग भरे शुचि मन में ।
न हो अनुचित योग प्रयोग धन साधन में ।
उत्कृष्ट उच्च आदर्श जगे जीवन में ।
तम मिटे, ज्ञानकी ज्योति जगत में छाये ।
प्रभु ! दिव्य दिवाली भव्य भाव भर लाये ।

इसके बाद एक थाली में दीया लेकर कपूर से आरती करे - निम्न आरती बोले ।

।। आरती ।।

सकल जिनंद नमी करी, जिनवाणी मन लाय ।
सरस्वति लक्ष्मी करू आरती, आतम सुगुरू पसाय ।।
ज्ञान जगत में सार हैं । ज्ञान परम हितकार ।
ज्ञान सूर्य से होता है, दुरित तिमिर अपहार ।।
श्री सरस्वती प्रभाव से, लहे जगत सम्मान ।
ज्ञान बिना पशु सारिखा, पावे अति अपमान ।।
श्रद्धा मूल क्रिया कही, ज्ञान मूल है तास ।
पावे शिव सुख आतमा, इससे अविचल वास ।।
अष्टमपद विशति पदे, सप्तम नवपद ज्ञान ।
तीर्थंकर पदवी लहे, आराधक भगवान ।।

आरती के बाद निम्नलिखित अष्टदोहे बोले ।

।। अष्टदोहे ।।

अंगुष्ठे अमृत वसे लब्धितणा भंडार ।
जय गुरू गौतम समरिये, वांछित फल दातार ।।१ ।।
प्रभू वचने त्रिपदी लही, सूत्र रचे तेणीवार ।
चऊदह पूरब माँ रचे, लोकालोक विचार ।।२ ।।

भगवति सूत्र कर नमी, बंभी लिपि जयकार ।
लोकलोकोत्तर सुख भणी, वाणी लिपी अढार ।।३।।
वीर प्रभू सुखिया थया, दिवाली दिन सार ।
अंतर महूरत तत्क्षणे, सुखिया सहू संसार ।।४।।
केवलज्ञान लहे सदा, श्री गौतम गणधार ।
सुरनर पर्षदा आगले घट अभिषेक उदार ।।५।।
सुरवर पर्षदा आगले, भाखे श्री श्रुतनाण ।
नाण थकी जग जाणिये, द्रव्यादिक चौठाण ।।६।।
ते श्रुतज्ञान ने पुजिये, दीप धूप मनोहार ।
वीर आगम अविचल रहो, वर्ष एकवीस हजार ।।७।।
गुरू गौतम अष्टक कही, आणि हर्ष उल्लास ।
भाव भरी जे समरशे, पुरे सरस्वती आस ।।८।।

।। लोगस्स (चउव्वीसत्थव) का पाठ ।।

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ।।१।।
उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।२।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिज्जंच वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।३।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं चं।
वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वध्दमाणं च ।।४।।
एवं मए अभित्थुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा. तित्थयरा में पसीयंतु ।।५।।
कित्तियवंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ।।६।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।७।।

।। नमोत्थुणं का पाठ ।। (२ बार)

नमोत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, संय–संबुध्दाणं, परिसुत्तमाणं पुरिस–सीहाणं, पुरिस–वर–पुण्डरीयाणं, पुरिसवरगंध–हत्थीण, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मणायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत–चक्कवट्टीणं दीवोत्ताणं, सरणगइपइट्ठाणं, अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं, सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव–मयल–मरुअ–मणंत–मक्खय–मव्वाबाह–मपुणरावित्ति–सिद्धिगइ–नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं।

(दूसरे में – ठाणं संपाविउकामाणं णमो जिणाणं जियभयाणं)

(तिसरे में) णमोत्थुणं मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसयस्स अणेगगुण संजुत्तस्स जाव संपविउ कामस्स ।

।। मंगलपाठ ।।

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते–सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे–सरणं पव्वज्जामि, साहू–सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तधम्मं सरणं पव्वज्जामि। अरिहंतो का शरणा, सिद्धों का शरणा, साधुओं का शरणा, केवलिप्ररुपित दयाधर्म का शरणा। चार शरणा, दुर्गति हरणा और शरणा नहीं कोय, जो भवी प्राणी आदरे तो अक्षय अमरपद होय ।

अंगुष्ठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार ।
श्रीगुरु गौतम सुमरिये, मनवांछित फलदातार।
भावे भावना भाविये, भावे दीजे दान ।
भावे धर्म आराधिये, भावे केवलज्ञान ।
पावे पद निर्वाण ।।

यहाँ दीपावली विधि संपन्न होती है । ●

दीपावली का यह दिन भगवान महावीर का निर्वाण दिन है अत: भगवान के फोटो के सामने बैठकर तन–मन को एकाग्र कर, रात्री में निम्न जप की २०–२० मालाएँ जपें ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी सर्वज्ञाय नम:

बादमें

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी पारंगताय नम:

की मालाएँ गिनें अथवा यथाशक्ति जाप करें।

कार्तिक सूद प्रतिपदा की सूर्योदय से पूर्व स्नानादि के बाद नमस्कार महामंत्र का जप करें और

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामी केवलज्ञानाय नम:

२० माला फेरें ।

फिर यह प्रार्थना बोले...

कुंदिंदुगोखीर तुसार वन्ना
सरोज हत्था कमले निसन्ना
वाएसिरी पुत्थय वग्ग हत्था
सुहायसा अम्ह सया पसत्था

इस प्रार्थना के बाद विद्या संपदा का महान ओजस्वी मंत्र का अवश्य जप करें (२० माला)

ॐ ह्रीं ॐ

जैन मंदिर या स्थानक, उपाश्रय में जाकर प्रभु का, संतों का दर्शन करें । मांगलिक श्रवण करें । गौतम स्वामी को मध्यरात्री के बाद भली सुबह केवलज्ञान प्राप्त हुआ अत: उस समय 'गौतम रास' अवश्य गावें ।

दीपावली की इस विधि का यथायोग्य पालन करें। सबका भला हो, मंगल हो, कल्याण हो । ●

सन २०२५ चे दीपावली पूजनाचे मुहूर्त

❖ **पुष्प नक्षत्र : अश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद ८**

मंगळवार दि. १४-१०-२०२५ : ✲ दुपारी १२.०० ते १२.३० लाभ, ✲ १२.३० ते २.०० अमृत ✲ ३.३० ते ५.०० शुभ, ✲ सायंकाळी ८.०० ते ९.३० लाभ ✲ रात्री ११.०० ते १२.३० शुभ

बुधवार दि. १५-१०-२०२५ : ✲ सकाळी ६.३० ते ८.०० लाभ, ✲ ८.०० ते ९.३० अमृत ✲ दुपारी ११.०० ते १२.०० शुभ

❖ **धनत्रयोदशी : (धनतेरस) अश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद १३**

शनिवार दि. १८-१०-२०२५ : ✲ दुपारी १२.३० ते २.०० चल, ✲ २.०० ते ३.३० लाभ, ✲ ३.३० ते ५.०० अमृत, सायंकाळी ६.३० ते ८.०० लाभ ✲ रात्री ९.३० ते ११.०० शुभ, ✲ ११.०० ते १२.३० अमृत

रविवार दि. १९-१०-२०२५ : ✲ सकाळी ८.०० ते ९.३० चल, ✲ ९.३० ते ११.०० लाभ ✲ दुपारी ११.०० ते १२.३० अमृत

❖ **महालक्ष्मी पूजन (दीपावली वही पूजन) : अश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद ३०**

सोमवार दि. २०-१०-२०२५ : ✲ दुपारी ४.०० ते ५.००० लाभ, ✲ ५.०० ते ६.३० अमृत ✲ सायंकाळी ६.३० ते ८.०० चल, ✲ रात्री ११.०० ते १२.३० लाभ ✲ पहाटे २.०० ते ३.३० शुभ, ✲ ३.३० ते ५.०० अमृत

✲ वृषभ लग्न कुंभ नवमांश सायंकाळी ७.५४ ते ८.०७ ✲ वृषभ लग्न वृषभ नवमांश सायंकाळी ८.३० ते ८.४८ ✲ वृषभ लग्न सिंह नवमांश रात्री ९.१३ ते ९.२७

मंगळवार दि. २१-१०-२०२५ : ✲ सकाळी ९.३० ते ११.०० चल, ✲ दुपारी ११.०० ते १२.३० लाभ ✲ १२.३० ते २.०० अमृत, ✲ दुपारी ३.३० ते ५.०० शुभ

✲ सिंह लग्न वृषभ नवमांश पहाटे २.२२ ते २.३६ ✲ कुंभ लग्न नवमांश दुपारी ३.२७ ते ३.३८

❖ **नूतन वर्ष : (वीर संवत २५५२, विक्रम संवत २०८२) कार्तिक शुध्द १**

बुधवार दि. २२-१०-२०२५ : ✲ सकाळी ६.३० ते ८.०० लाभ, ✲ ८.०० ते ९.३० अमृत ✲ दुपारी ११.०० ते १२.३० शुभ, ✲ ३.३० ते ५.०० चल, ✲ सायंकाळी ५.०० ते ६.३० लाभ

श्री शुभम् भवतु !

प्रेषक : नवीनकुमार बी. शहा – २३० पाटील प्लाझा, मित्र मंडळ चौक, पुणे ९. मो. ९८२२०९०३३९

दीपावली – एक विशेष चिन्तन

संकलन : समरथमलजी संघवी, इन्दौर

भारतवर्ष में जितने भी पर्व हैं उनमें दीपावली पर्व सर्वाधिक लोकप्रिय और जन-जन के मन में हर्ष उल्लास पैदा करने वाला है। वैदिक प्रार्थना है तमसो माऽज्योतिर्गमय। अर्थात तम यानी अंधकार से प्रकाश में आने का पर्व है दीपावली। दीपावली के समय लोग दुकानों व घरों की सफाई करते हैं, रंग-रोगन करते हैं। लोगों में यह भावना रहती है कि इस दिन श्री लक्ष्मीजी दुकान में व घर में प्रवेश करती हैं। जीवन में धन का महत्त्व है, इससे इन्कार नहीं किया जा सकता। धन से मानव अपना रोज का जीवन-व्यवहार चलाता है। अपनी आशा-आकांक्षाओं को पूरा करने की कोशिश में रहता है। मनुष्य चाहता है- उसे अच्छा भोजन मिले, रहने को सुन्दर-सा घर हो और जब वह बीमार पड़ जाए, तो उसे अच्छी-से-अच्छी चिकित्सा मिले। इन सबकी पूर्ति के लिए ही वह श्री लक्ष्मीदेवी की पूजा-अर्चना करता है। कामना करता है कि श्री लक्ष्मीदेवी उसके भण्डार को धन-धान्य से परिपूर्ण कर दे। पर धन में बड़ा प्रसाद होता है, मद होता है, विकार होता है।

प्रायः लोग दीपावली के मात्र बाह्य प्रसंगों का स्मरण कर पर्व मनाने की सार्थकता समझ लेते हैं। श्रीराम के अयोध्या प्रवेश को याद करते हैं, महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वर्गवास की स्मृति कर लेते हैं, राष्ट्र संत विनोबाजी के देहत्योग की गरिमा पा लेते हैं, किन्तु प्रकाश पर्व के उन आन्तरिक संदेशों को अनदेखा कर देते हैं, जो हमें अपनी आत्मा में निहित प्रकाश को उत्पन्न करने की प्रेरणा देते हैं।

जैन दृष्टि से दीपावली एक त्याग तथा संयम का पर्व है। भौतिक पर्व के साथ-साथ यह आध्यात्मिक पर्व भी है। इस दिन कार्तिक कृष्ण अमावस्या को चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर ने निर्वाण पद (मोक्ष सिद्धावस्था) को प्राप्त किया था। जैन समाज भगवान की निर्वाण-पद प्राप्ति की खुशी में बहुत प्राचीनकाल से ही दीपावली पर्व मनाता आ रहा है। निर्वाण पद की प्राप्ति आसक्ति से नहीं, विरक्ति से; भोग से नहीं, त्याग से; वासना से नहीं, साधना से; बाह्य लिप्तता से नहीं, संयम तप से होती है। काल प्रवाह को रोकना सम्भव नहीं है। समाज इस पर्व के आध्यात्मिक सन्देश को भूलकर भौतिक, दैहिक वासनाओं की तृप्ति में लिप्त हो रहा है। अच्छा खाना, अच्छा पहनना, आमोद-प्रमोद करना आदि तो दीपावली का बाह्य पक्ष है, जो भौतिक दृष्टि से आकर्षक जरूर लगता है, किन्तु आत्मिक दृष्टि से कतई उचित नहीं है। जैन धर्म, जीवन का अन्तिम लक्ष्य निर्वाण (मोक्ष) प्राप्ति को ही मानता है।

आज हमारी नई पीढ़ी भगवान महावीर के निर्वाण पक्ष को प्रायः भूलती जा रही है तथा इस दिन होटलों में, पार्टियों में अभक्ष्य भक्षण, जुआ खेलना, घोर हिंसा करने वाले पटाखों को छोड़ना तथा अन्य अनेक दुष्प्रवृत्तियों में लिप्त होकर मानव जीवन को गर्त में ढकेल रहे हैं। दीपावली के दिन जुआ खेलने की परम्परा बहुत पहले से चली आ रही है। अज्ञानी लोग मानते हैं कि इस दिन जुआ खेलने से लक्ष्मी आती है यह उनका झूठा भ्रम है। आतिशबाजी के कारण कितने ही निरीह प्राणी मौत के मुँह में चले जाते हैं। यदि तुम किसी को जीवन दे नहीं सकते तो, दूसरों के प्राण लेने का तुम्हें क्या अधिकार? दूसरों के प्राणों की घात सबसे बड़ी हिंसा है। इससे उनके प्राणों की तो घात होती ही है, किन्तु कई लोग अपने प्राणों से भी हाथ धो

बैठते हैं। प्रायः सुनते हैं कि आतिशबाजी के कारण अमुक जगह आग लग गईं, लाखों-करोड़ों का नुकसान हो गया तथा अनेक लोगों के नेत्र की ज्योति चली जाती है, कइयों के हाथ-पाँव जल जाते हैं, महिलाओं व पुरुषों के कीमती वस्त्र जल जाते हैं, कई अधजले होकर रह जाते हैं। यह कैसी बरबादी है? तन की भी और धन की भी।

आजकल दीपावली के दिन उद्योगपति, व्यापारी तथा अन्य लोग अपनी अनेक विवशताओं के कारण तत्सम्बन्धी अधिकारियों के पास बड़े-बड़े कीमती उपहार भेजते हैं, ये सभी उपहार आन्तरिक खुशी से नहीं, बल्कि विभिन्न संकटों से अपनी सुरक्षा करने के लिए रिश्वत के रूप में भेजे जाते हैं, यह वास्तव में चोरी का ही एक रूप है।

दीपावली के समस्त सांसारिक आयोजन हमारी आत्मा के अज्ञान रूपी अंधकार के ही पोषक एवं सूचक हैं। दीपकों का प्रकाश, मिष्ठान सेवन एवं वितरण, मकान-दुकान की स्वच्छता, लक्ष्मी उपासना, परिग्रह का असीमित प्रदर्शन, पाँचों इन्द्रियों के विषयों के खुलकर सेवन की प्रवृत्ति, दुर्व्यसनों के प्रति आसक्ति आदि जो भी आयोजन हम दीपावली के दिन करने के अभ्यस्त हो चुके हैं, वे सभी हमारे अज्ञान रूपी अंधकार के पोषक एवं सूचक ही हैं, उनसे कभी भी आत्मिक ज्ञान की उपलब्धि सम्भव नहीं है। ये सभी दीपावली-आयोजन 'तमसो माऽज्योतिर्गमय' की भावना के सर्वथा विपरीत हैं।

हम चाहे हजारों, लाखों, अनन्तानन्त वर्षों तक भौतिक दीपकों का प्रकाश करते रहें, दीपावली मनाते रहें, हमें वास्तविक ज्योति की प्राप्ति नहीं हो सकती। उस अक्षय, अविनाशी, शाश्वत प्रकाश रूप केवल ज्ञान की प्राप्ति के लिए तो हमें वही करना होगा, जो भगवान महावीर या अन्य महापुरुषों ने किया था। अनेक उपसर्गों-परीषहों से गुजरते हुए, कठोर संयम तप साधनाओं, तपश्चर्याओं आदि की पगडण्डियों पर चलकर ही परम ज्योति 'केवल ज्ञान' की उपलब्धि सम्भव है। हम भगवान महावीर के जीवन का अवलोकन करें। उन्होंने कितना लम्बा और कैसा कष्ट भरा तप किया था।

आज समाज योग और त्याग वृत्ति के पथ पर चलने के स्थान पर भोग और परिग्रह वृत्ति के प्रति आकृष्ट हो गया है। निर्वाण मार्ग के अनुसरण के बजाए संसार-भव भ्रमण के मार्ग को अपनाने लगा है और वैराग्य के स्थान पर राग को अपनाने लगा है। त्याग के पर्व को हमने भोग का पर्व बना दिया है। युग प्रवाह में बहते हुए दीपावली का पर्व विकृत हो गया है। जिस त्याग एवं साधना के बल पर भगवान महावीर ने निर्वाण पद प्राप्त किया था, उस त्याग और साधना को भूलकर हम केवल बाह्य प्रकाश पर अटककर रह गए हैं।

सारे विश्व को प्रकाश प्रदान करने वाला भारत आज कितने अंधकार में जी रहा है? क्या कभी हम एक क्षण के लिए भी इसका चिन्तन करते हैं? कौन पोष रहा है, भारत के अंधकार को? भारत पर अभी कोई विदेशी शासन नहीं है। भारतीय ही भारत पर शासन कर रहे हैं। हम ही देश के नैतिक पतन के जिम्मेदार हैं। हम ही भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन देते हैं, उसे पालते हैं। सच्चाई और नैतिकता को हमने ही निस्तेज कर दिया है। अपने स्वार्थ के पीछे हम अपनी अस्मिता तक से खिलवाड़ करने को तत्पर रहते हैं। राष्ट्रीयता का नारा हमारा वाणी विलास मात्र रह गया है। हम राष्ट्र के स्तर पर स्वतंत्र होकर अंधकार के घने घेरे में कैसे चले गए हैं?

क्या यह अंधकार किसी दीपक से मिटाया जा सकता है? क्या भौतिक रूप से दीपावली को धूमधाम से मनाकर अपने राष्ट्र की अन्तर आत्मा को प्रसन्न कर सकते हैं? तुच्छ स्वार्थों के पीछे अपनी चेतना के समस्त प्रकाश को भुला करके घने अंधकार में भटकने वाले हम क्या कभी दीपावली का सच्चा अर्थ पा

सकेंगे? क्या हम कभी स्वयं से पूछते हैं कि हम कहाँ हैं? प्रकाश में या अंधकार में? यदि अंधकार में हैं, तो क्यों? हमारी तमसो माऽज्योतिर्गमय की प्रार्थना असफल क्यों हो रही है?

सबसे बड़ा कारण है हम अपनी आत्म-ज्योति को ओझल करके जीते हैं। हम उसे प्रज्वलित करना ही भूल गए। दीपावली हमें प्रेरणा दे रही है कि हम अपनी चैतन्य ज्योति को प्रज्वलित करें। अपना दीपक स्वयं जलाएँ। अपनी आत्मा को ही दीपक बनाकर उसे जगमगाएँ। उसके लिए बस चाहिए आत्मविश्वास।

हम विश्वगुरु भारत के नागरिक हैं, किन्तु शुद्रता के गुलाम बनकर रह गए। हम वाक्रशूर अवश्य हैं, किन्तु आचरण के स्तर पर हम बहुत पिछड़ गए हैं। हम दुर्व्यसनों के बीहड़ में भटक गए हैं। हम पश्चिम के लज्जाविहीन संस्कारों के अनुकरण में लग गए हैं। आज भारतीय जन-जीवन की अधिकांश ऊर्जा विकृतियों की गटर में बही जा रही है। लोक जीवन के इस पतन में हम ही उत्तरदायी हैं। हम कभी अपना दोष स्वीकार नहीं करते। हम कभी समाज को, कभी सरकार को उत्तरदायी बताने लगते हैं, किन्तु समाज और राष्ट्र का निर्माण तो अपने से है। हम कर्तव्य परायण और नैतिक हों, तो ही स्वस्थ समाज या सरकार का निर्माण होगा। परिवर्तन तो स्वयं में लाना है।

दीपावली से अत्यधिक प्रेरणा ग्रहण करने की आवश्यकता है। परम्परागत भौतिक दीपावली मनाने के प्रति घृणा उत्पन्न करें और सावधान होकर आध्यात्मिक दीपावली मनाने के प्रति आकृष्ट होवें। हम भोगों की आसक्ति को त्यागने तथा योग की ओर झुकने का प्रयास करें तथा भगवान महावीर द्वारा बताए गए अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रम्हचर्य और अपरिग्रह के सिद्धान्तों का परिपालन करने में अपने को संलग्न रखें - यही अंधकार से प्रकाश की ओर जाने का उपक्रम है। यह कार्य कठिन तो अवश्य है, किन्तु असम्भव नहीं है। ●

तीर्थंकर महावीर के चरम परम सुनहरे वरदान

श्रीमद् उत्तराध्ययन श्रुतदेव आराधना

।। जिनेश्वरी पारायण ।।

२१ दिवसीय दिव्य अनुष्ठान पूना की धन्य धरा पर

प्रवचनकार : अर्हम् विज्जा प्रणेता श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.

२ से २२ अक्टुबर २०२५ * प्रतिदिन प्रात : ७.३० से ९.३० बजे

स्थान : वर्धमान सांस्कृतिक केन्द्र, गंगाधाम शत्रुंजय रोड, पूना

आयोजक : गुरु आनंद फाउंडेशन

श्री आदिनाथ स्थानकवासी जैन भवन ट्रस्ट, पूना.

उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी चातुर्मास समिती २०२५